(b) लोक नाट्य / क्षेत्रीय नाट्य

भारत में लोक नाट्य की परंपरा अती प्राचीन है। भरत मुनि ने भी अपने नाट्यशास्त्र में इस विषय का विस्तृत वर्णन किया है। इनके अलावा भी बहुत ऐसे उपन्यासकार है जिन्होंने अपने उपन्यास में इसकी विस्तृत चर्चा की है।

इतिहास एवं उत्पत्ती

देवताओं की प्रार्थना पर ब्रह्मा ने मानवों के मनोरंजन हेतु नाट्य की रचना की। इसप्रकार सभी वर्णों के मनोरंजन के लिए ब्रह्मा ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर पंचम वेद की रचना की जिससे नाट्यवेद की उत्पत्ती होती है।

नाटक एक सार्वजनीक मनोरंजन की कला है। यह विभिन्न प्रकार के रुची रखने वाले लोगों के मनोरंजन का एक उच्चतम साधन है।

आरंभ में तो नाटककला अपने उच्चतम शिखर पर पहुंचा पर धीरे-धीरे नाटकरचना तथा उसके अभिनय का ह्रास होने लगा।

कुछ समय बाद, उत्तरी भारत में भक्ति-आंदोलन के प्रचारक गोस्वामी वल्लभाचार्य ने कृष्णभक्ति का भरपुर प्रचार प्रसार

Scanned by CamScanner

किया जिसमें इनके अनुयायियों ने भगवान श्रीकृष्ण की बाललीलाओं का अभिनय मंदिरो मठो तथा अन्य स्थानों पर करने लगे जिसे देखने के लिए श्रद्धालु जनता की भीड़ जुटने लगी। भगवान कृष्ण की यही बाललीला आगे चलकर "रासलीला" के रूप में बदल गई, जिसे आज भी मथुरा तथा वृन्दावन के लोग बड़े प्रेम से मनाते है।

उत्तरी भारत में रामलीला का प्रचार गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा हुई। उन्होंने काशी में रामलीला ~~कराई~~ करानी प्रारंभ की

इसप्रकार उत्तरप्रदेश में दो नाट्यपरंपराओं का जन्म हुआ —

(1) रासलीला (2) रामलीला

उसी समय बंगाल में चैतन्य महाप्रभु का उद्भव हुआ जिन्होंने ~~[illegible]~~ कृष्णभक्ति का प्रचार-प्रसार किया। चैतन्य भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति करते समय इतने आत्मविभोर हो जाते थे यही आगे चलकर उन्होंने कीर्तन करने लगे। उन्होंने अनेक तीर्थस्थानों की यात्रा की धीरे-धीरे इन यात्राओं तथा कीर्तनों ने लोकनाट्य का रूप ले लिया जिसमें कृष्ण की लीलाऐ अभिनय के माध्यम से

③

दिखाई जाने लगी
⟹ कुछ प्रसिद्ध लोकनाट्य
भारत के विभिन्न राज्यों में भिन्न - भिन्न प्रकार के लोकनाट्य प्रचलित जिसमें रामलीला, रासलीला के अलावा, मध्यप्रदेश के मालवा प्रांत में 'मांच' शब्द सुप्रसिद्ध है। इसका प्रारंभ 19 वीं शताब्दी में हुआ था। मालवा में मांचों की परम्परा बहुत समय से चली आ रही है। उत्तरप्रदेश के पश्चिमी जिलों में नौटंकी का बड़ा महत्व है उससे ज्यादा हाथरस की नौटंकी प्रसिद्ध है। इसे "स्वांग" या "भगत" भी कहते हैं। "भगत" नाटक आगरा में बहुत प्रसिद्ध है। ब्रजमंडल के मंच पर 'नौटंकी' के जैसा "भगत" का अभिनय किया जाता है। इस प्रदेश में 'बिदेसिया' नाटक भी बहुत लोकप्रिय है जिसे देखने के लिए हजारों की भीड़ एकत्र होती है।

यात्रा (जात्रा)

यात्रा धार्मिक लोकनाटक है जो की बंगाल में होता है।
महाराष्ट्र में तमाशा, ललित, गोंधल, बहुरुपिया और दशावतार आदि लोकनाट्य मराठी भाषा में होते हैं।
महाराष्ट्र का सबसे प्राचीन लोकनाट्य तमाशा है। तमाशा करने वाली मंडली

Scanned by CamScanner

"फड़" कहलाती है।

"गोंधल" चर्मे से संबंधित लोकनाट्य है। यह विवाह आदि उत्सवों पर किया जाता है।

यक्षगान

"यक्षगान" दक्षिण भारतीय लोकनाटक है जो तमिल, तेलुगु तथा कन्नड़ भाषा में की जाती है यह आम जनता के बीच ज्यादा प्रचलित है।
यक्षगान बहुत पुरानी नाट्य परंपरा है गीतों के साथ प्रस्तुत की जाती है।

विधि नाटकम्/ विधि भागवतम

यह तेलुगु का लोकनाटक है, इसका शाब्दिक अर्थ है वह नाटक जो शहर में चलते हुए दिखाई जा सके। इस नाटक में एक या दो ही पात्र रंगमंच पर दिखाई देते हैं। स्त्रियां समूह में नृत्य और अभिनय करती हैं।

स्वांग

यह पंजाब, हरियाणा, ओडिशा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और बंगाल के गांवों में बहुत प्रसिद्ध है।

Scanned by CamScanner

स्वांग दो प्रकार से किया जाता है,
(1) रोहतक (2) हाथरस
रोहतक हरियाणवी भाषा में किया जाता है तथा हाथरस ब्रजभाषा में किया जाता है।

नौटंकी

यह उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध लोकनाट्य है। नौटंकी 19 वीं शताब्दी में प्रारंभ हुई।

दशावतार

यह गोवा क्षेत्र का सबसे विकसित और प्रसिद्ध लोकनाटक है। यह नाटक भगवान विष्णु के दस अवतारों जैसे (वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, वराह, नरसिंह, कूर्म, मत्स्य, बुद्ध व कल्कि) जैसे दशावतार का प्रदर्शन करते हैं।

करियाला

यह हिमाचल प्रदेश का लोकप्रिय नाटक है। ज्यादातर शिमला, सोलन और सिमोर में। इसका प्रदर्शन मेले और उत्सव के दौरान की जाती है।

Scanned by CamScanner

~~स्वांग~~ —

तमाशा —

तमाशा पश्चिम भारत के महाराष्ट्र राज्य में 16 वीं शताब्दी में शुरू हुई। अधिकतर नाटकों में मुख्य भूमिका प्रायः पुरुषों की होती है। लेकिन तमाशा में ~~मुख्य~~ मुख्य भूमिका महिलाओं की ही होती है।

ओट्टन थुल्लल

यह केरल का लोकप्रिय नाटक है।

तेरुक्कुट्टु

यह तमिलनाडु का लोकप्रिय नाटक है। इसका प्रदर्शन वर्षा की देवी मरिअम्मा को खुश करने के लिए किया जाता है। यह मनोरंजन, अनुष्ठान, और सामाजिक उत्सवों पर किया जाता है।

भाम कलापम

यह आंध्र प्रदेश का एक लोकप्रिय नाटक है। यह 16 वीं शताब्दी में सिद्धेन्द्र योगी द्वारा लिखा गया था। जैसे कुचीपुडी नृत्य में हाव-भाव तथा चेहरे की अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया जाता है ठीक उसी तरह इस नाटक में भी किया जाता है। इसप्रकार भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोकनाट्य प्रचलित है।

Scanned by CamScanner